9

क्रूस और कलीसिया

जो लोग नए नियम की इस विचारधारा से परिचित हैं कि मसीह ने हमारे पापों का दाम चुका दिया है, वे मानेंगे कि ''मसीह क्रूस के बिना पापियों को बचाने के लिए उसी प्रकार शक्तिहीन होगा जैसे क्रूस मसीह के बिना।'' परन्तु सुसमाचार की खुशखबरी यह है कि परमेश्वर के अभिषिक्त, मसीह ने पापियों के लिए क्रूस पर अपना जीवन दे दिया। उसने हमारे पापों के कारण अपनी शारीरिक देह को दे दिया (1 कुरिन्थियों 15:3)।

बाइबल की कहानी का सार मनुष्य के लिए क्रूस पर परमेश्वर के पुत्र का बलिदान है। पुराने नियम के पृष्ठ, जिन पर इसकी भविष्यवाणियां हैं, और नए नियम के पृष्ठ, जिन पर इसके इतिहास की वास्तविकता है, से मसीह का लहू टपकता है। हैनरी सी. थियसन ने हिसाब लगाया कि यीशु के जीवन के अन्तिम तीन दिनों के वर्णन ने ही सुसमाचारों का लगभग पांचवां भाग घेरा हुआ है। यदि यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के साढ़े तीन वर्षों के बारे में उसकी मृत्यु के समान ही विस्तारपूर्वक लिखा जाता तो सुसमाचार के पन्नों की संख्या 8,400 तक पहुंच जाती।[1]

आर. ए. टोरे का अनुमान है कि नए नियम के प्रत्येक 53 पदों में से 1 पद में मसीह की मृत्यु[2] का विशेष उल्लेख किया गया है। संसार में मसीहियत ही एक ऐसा धर्म है जो पाप के लिए आत्मिक बलिदान और उस बलिदान के मृतकों में से जी उठने पर केन्द्रित है।

पाप और पापियों, अपराध और दुष्टता, तलाक और क्लेश के इस संसार में, क्रूस उद्धार के लिए *परमेश्वर की सामर्थ* है; संसार की मूल समस्या का यह ईश्वरीय समाधान है। वह हमारे पापों का प्रायश्चित है– अर्थात, जो पाप हमने किये थे, उनका दण्ड उसने खुद झेलकर हमारा मिलन परमेश्वर के साथ सम्भव बना दिया। लिखा है:

''क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है'' (1 कुरिन्थियों 1:18); ''और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है; और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी'' (1 यूहन्ना 2:2)।

हमारे आत्मिक झगड़े, जिसके कारण हम परमेश्वर से दूर हो गए थे, उसके साथ हमारी अनबन हो गई थी, को मिटाकर *मेल और सुलह करने के लिए* क्रूस ही *परमेश्वर का हथियार है।* पौलुस ने लिखा, परमेश्वर ने ''उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा अपने साथ मेल...'' किया (कुलुस्सियों 1:20)। इफिसियों 2:14-16 में कहा गया है, ''क्योंकि वही हमारा मेल है, जिसने दोनों को एक कर लिया और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया... कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।''

जहां आत्मिक भूख और निर्धनता बहुत अधिक होगी, वहीं *परमेश्वर भरपूरी के साथ छुटकारा भी भेजता* है। क्रूस के चरणों में धार्मिकता के ख़ज़ाने मुज़्त बांटे जाते हैं। पौलुस ने कहा, ''परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं...'' (1 कुरिन्थियों 1:23)। उसने आगे कहा कि क्रूस पर चढ़ाया गया मसीह ही, ''परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा'' (1 कुरिन्थियों 1:30)।

निस्संदेह, पवित्र आत्मा मसीह के क्रूस पर मध्यसज्जा के रूप में जो कि बाइबल का केन्द्रीय सन्देश है, पर अपना प्रकाश चमकाता है।

क्योंकि क्रूस छुटकारे की अन्य सभी सच्चाइयों के साथ सज़्पूर्ण होती है इसलिए आशा होगी कि कलीसिया ऐसे उस क्रूस रूपी झरने में से धारा बनकर निकले, जैसे सूर्य में से चंगाई की किरणें। नए नियम को सावधानीपूर्वक पढ़ने से पता चलता है कि बात कुछ ऐसी ही है। मसीहियत मसीह और उसकी कलीसिया के बिना नहीं हो सकती; युक्तिसंगत सोच यह बताती है कि बिना सिर के कोई धड़ जीवित नहीं मिल सकता। नए नियम के संदेश की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि क्रूस और कलीसिया आपस में गुथे हुए हैं, एक योजना के रूप में जुड़े हुए हैं, जिससे नाश हो रही मनुष्यजाति को परमेश्वर की कृपा का दान दिया जाए, पृथ्वी की सभी जातियों में से, परमेश्वर क्रूस के द्वारा अपने चुने हुए लोगों का एक परिवार बनाता है जो कि- मसीह में एक देह बन जाता है।

आइए इस विचार को और आगे बढ़ाएं: कलीसिया क्रूस के साथ कैसे जुड़ी हुई है ? क्रूस और कलीसिया का एक दूसरे के साथ क्या सम्बन्ध है ? कलीसिया के लिए क्रूस क्या करता है ?

इसके द्वारा सृजी गई

पहले, क्रूस कलीसिया का सृजन करता है। पापियों के छुटकारे के द्वारा कलीसिया निकलती है। यदि क्रूस न होता तो कलीसिया भी न होती।

जब कोई व्यक्ति मसीह को आज्ञाकारी विश्वास के साथ उद्धारकर्त्ता और परमेश्वर का पुत्र मानता है तो उसके पाप मसीह के लहू में धोए जाते हैं (प्रेरितों 22:16)। शुद्ध होने के साथ ही वह छुटकारा पाये हुए लोगों के समुदाय में मिल जाता है। उद्धार पाए हुओं के इस नए समाज को नये नियम में ''कलीसिया'' कहा गया है। इसी कारण, पौलुस कह सकता था कि ''कलीसिया'' को यीशु के लहू से खरीदा गया है। ''अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो। जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने ही लोहू से मोल लिया है'' (प्रेरितों 20:28)। स्पष्ट है कि मसीह कलीसिया के लिए ही क्रूस पर मरा। पौलुस ने कहा, ''मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिए दे दिया'' (इफिसियों 5:25ख)। यीशु की मृत्यु का उद्देश्य ''बुलाए हुए'' लोग उपलब्ध कराना था जो इस संसार में मसीह की संगति में रहें और अपने आप को उसके आत्मिक कार्य के लिए दे दें। पौलुस ने तीतुस को बताया कि यीशु ''ने अपने आप को हमारे लिए दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिए ऐसे लोग बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हों'' (तीतुस 2:14)।

दक्षिणी आरकन्सास में एक सुसमाचार सभा के बाद, एक महिला ने प्रचारक को एक असामान्य, मर्मस्पर्शी कहानी सुनाई। उसने कुछ ऐसी घटना बताई जो उस समय घटी थी जब वह चार वर्ष की थी और डैलस, टैक्सास में रहती थी। उस समय उसका परिवार भीड़ भरे राजमार्ग के निकट ही रहता था, और उसके आंगन में बच्चों के खेलने के लिए थोड़ी सी जगह थी। एक शाम, वह और पड़ोस के कई बच्चे आंगन में गेंद खेल रहे थे। गेंद उसके सिर के ऊपर से निकलती हुई राजमार्ग की तरफ लुढ़कती चली गई। बिना कुछ सोचे, वह गेंद लेने के लिए भागी। जैसे ही वह गेंद उठाने के लिए झुकी, राजमार्ग पर एक बड़ा ट्रक अपनी ओर आते देख भय से बेजान सी हो गई।

उसके भाई ने, जो उस समय नौ वर्ष का था, उसे राजमार्ग की ओर भागते हुए देखा था और ट्रक को भी । उसे बचाने के लिए वह बिजली की तरह उसके पीछे भागा। उसने ट्रक के आगे से बड़ी मुश्किल से अपनी जान पर खेलकर अपनी बहन को परे धकेलकर उसे निश्चित मौत से बचा लिया। लड़के के पास अपनी बहन को बचाने के लिए पलभर का समय काफी था, परन्तु इतना समय नहीं था कि वह अपने आप को बचा पाए। ट्रक उससे टकराया, और उसे कुचलता हुआ निकल गया।

उस महिला ने बताया कि उसे वह दु:खद घटना विस्तार से तो याद नहीं, परन्तु उसे इतना याद है कि उसके भाई की मृत देह को कैसे सड़क से उठा कर घर की ड्योढ़ी में तब तक रखा गया था जब तक कि एक ऐम्बूलैंस आकर उसे उठाकर ले न गई। उसने फिर लम्बी सांस लेकर अपने भाई का धन्यवाद करते हुए बड़ी ही महत्वपूर्ण बात कही, ''मेरा भाई मेरे लिए मर गया।'' वह महिला एक विश्वासी मसीही है, परन्तु आज उसे यह जीवन और कलीसिया में आने का अवसर इसलिए मिला क्योंकि बहुत वर्ष पहले उसके भाई ने उसके लिए अपना बलिदान दिया था।

बिल्कुल इसी प्रकार, परन्तु और अधिक गहरे ढंग से, कलीसिया को जीवन यीशु के बलिदान के कारण मिलता है। उसके बलिदान से न केवल हमें जीवन में प्रवेश का अवसर ही मिला है, बल्कि उससे हमें निरन्तर जीवन मिलता रहता है; उसकी मृत्यु हमारे प्रायश्चित का बलिदान है, हमारे पिछले पापों की क्षमा का साधन है। यीशु इस संसार में आया, परमेश्वर- मनुष्य के रूप में हमारे मध्य विचरा और उसने अपनी मृत्यु द्वारा अपने लिए ''परमेश्वर की निज प्रजा'' को मोल ले लिया (1 पतरस 2:9)। कलीसिया या चर्च ईंटों और सीमेंट की नहीं बनी; यह तो उसके लहू से खरीदे गए लोग हैं।

मसीह के बलिदान को हम तीन प्रकार से स्वीकार कर सकते हैं। पहला, मसीह ने जो कुछ हमारे लिए किया उसके लिए उसका *आभार* मानकर हम क्रूस को गले लगाते हैं। धन्यवाद हो परमेश्वर का कि छुटकारा प्राप्त किए हुए लोग मसीह की कृपा के दान से आनन्दित होते हैं! मसीह के पास स्वर्गीय महिमा के भरपूर भण्डार थे; परन्तु फिर भी हमारे कारण स्वर्ग को छोड़ कर और मनुष्य बनकर वह निर्धन बना, ताकि उसके निर्धन बनने से हम आत्मिक धन को पा सकें (2 कुरिन्थियों 8:9)। दूसरा, हमारे लिए उसकी मृत्यु का लाभ उठाने के लिए उसे सच्चे मन से स्वीकार कर प्रभु मान लेना आवश्यक है। मसीह के प्रति विश्वास और आज्ञाकारिता से ही, हमें अपने जीवनों में उसकी मृत्यु का लाभ प्राप्त होता है (रोमियों 6:1-4)। वह सभी के लिए

मरा (इब्रानियों 2:9), परन्तु उसकी मृत्यु का लाभ केवल वे ही उठाते हैं, जो उसकी आज्ञा मानते हैं (इब्रानियों 5:8, 9)। तीसरा, मन से सेवा करके हमें उसके बलिदान को स्वीकार करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:58)। हम सिर से लेकर पांव तक देह, प्राण और आत्मा सब मसीह के हैं (1 कुरिन्थियों 6:19-20)। इसी कारण, इस संसार में हमारा काम उसकी सेवा, उसकी इच्छा, निर्देश और उसके आनन्द को पूरा करना है।

इसके द्वारा शुद्धि हुई

दूसरा, क्रूस कलीसिया को लगातार शुद्ध करता है। शुद्ध करने की इसकी शक्ति परमेश्वर के लोगों में और उनके द्वारा प्रतिदिन बहती है। बिल्कुल वैसे ही जैसे हमारी शारीरिक देह में लहू संचार करके हमें शक्ति देता और शुद्ध करता है, उसी प्रकार यीशु का बहुमूल्य लहू अपने लोगों के बीच बहता है और उनको जीने की शक्ति प्रदान करता है।

हमें केवल *बचाए* जाने की ही आवश्यकता नहीं है बल्कि हमें *बचे रहने* की भी आवश्यकता है। जब भी कोई पापी मसीह के सुसमाचार की आज्ञा को मानकर उसके लहू में धोया जाता है और परमेश्वर की कृपा से मसीह में आता है तो कलीसिया बढ़ती है। जब एक मसीही प्रतिदिन प्रकाश में चलता है तो उसे प्रतिदिन मसीह के खून से धोया जाता है। यूहन्ना ने लिज़ा, ''पर यदि जैसे वह ज्योति में है, वैसे ही हम जी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है'' (1 यूहन्ना 1:7)। यूहन्ना ने जो ''शुद्ध करता है'' शब्द का उपयोग किया है वह यूनानी भाषा में वर्तमान क्रियाशील काल है जो इस बात का संकेत है कि वह निरन्तर अब, इस समय भी धो रहा है।

एक मसीही कोई सज़्पूर्ण व्यक्ति नहीं है, यद्यपि वह पाप से दूर रहकर प्रतिदिन मसीह में बढ़ना चाहता है। *वह निर्दोष नहीं है, परन्तु उसे दोष रहित होना ही चाहिए*। पापी के जीवन में पाप की उपस्थिति ही मसीह के लहू के द्वारा उद्धार को आवश्यक बनाती है, और एक सन्त के जीवन में पाप का अर्थ है कि उसे भी मसीह के लहू के द्वारा उद्धार की आवश्यकता है। इस संसार में हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता पापों की क्षमा है।

एक बच्चे को साइकिल चलाना सीखते हुए देखना दिलचस्प होता है। इस नई

कला को सीखने के लिए मुज्य रूप से दो कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है: साइकिल पर बैठना और फिर उसको खड़े रखना। उद्धार पाने के लिए भी साइकिल सीखने जैसी ही दो बातें हो सकती हैं: पापी के लिए पहले तो आवश्यक है कि वह परमेश्वर के साथ सीधा हो और फिर उसके बाद सीधा खड़ा भी रहे। सीधा होना आवश्यक है, परन्तु यह तो एक आरज़्भ ही है। जिस बात से वह पहले पापी बना था– जो उसके जीवन में पाप का धब्बा था– वही बात उसे मसीही बनने के बाद भी पापी ठहरा सकती है यदि वह लगातार शुद्ध न हो (प्रेरितों के काम 8:22)। यदि उसे मसीही बनने से पहले पापों से उद्धार की आवश्यकता थी, तो भला मसीही बनने के बाद किए पापों से उद्धार की आवश्यकता क्यों नहीं होगी?

एक मसीही जब तक ''ज्योति में चलता है'' वह बचाया जा सकता है। प्रेरित यूहन्ना के अनुसार ज्योति में चलने के लिए दो आत्मिक गुण होने चाहिए। *इसका आर भ उद्धार के लिए यीशु पर भरोसा* रखने से होता है: ''और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है; और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी'' (1 यूहन्ना 2:2)। स्पष्ट है कि, हम उद्धार कमा नहीं सकते (इफिसियों 2:8, 9)। यीशु ने कहा कि यदि हम विश्वास और आज्ञाकारिता में उसे उत्तर देंगे तो, वह हमें बचाएगा। जो कुछ उसने करने के लिए कहा है, हमें वैसा ही करना चाहिए। हम विश्वास से चलते हैं, देखने से नहीं (2 कुरिन्थियों 5:7)।

ज्योति में चलने के लिए *ईमानदारी से उसकी इच्छा को पूरा करना* भी आवश्यक है। यूहन्ना ने लिखा ''और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें ...'' (1 यूहन्ना 5:3); ''जो कोई यह कहता है कि मैं उसे जान गया हूं और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं; पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है'' (1 यूहन्ना 2:4, 5क)। ज्योति में चलने का अर्थ अपने पापों को मान लेना है (1 यूहन्ना 1:8, 10), परमेश्वर के सामने अपने पापों को मानना है (1 यूहन्ना 1:9), और अपनी योग्यता की सहमति से अपने पापों को सुधारना है (1 यूहन्ना 2:29)। इसका अर्थ है कि उस प्रकार चलना जैसे वह चलता था (1 यूहन्ना 2:6) और गज़्भीरतापूर्वक परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से दिए प्रकाशन अर्थात बाइबल को मानना है (2 तीमुथियुस 3:16)।

इसके द्वारा प्रेरित की गई

तीसरा, क्रूस कलीसिया को प्रेरणा देता और क्रियाशील करता है। यह कलीसिया के हृदय में आत्मिक प्रेरणा डालता है कि हम वैसे व्यक्ति बनें जैसे मसीह चाहता है और वे काम करें जो वह चाहता है कि हम करें।

मसीहियों को व्यक्तिगत सामर्थ के साथ-साथ लगातार शुद्धि की भी आवश्यकता है। मसीहियत भलाई की प्रेरणा देती है; परमेश्वर की कृपा सबसे बढ़कर है और हमेशा बनी रहती है। क्रूस मसीहियों के जीवनों को संचालित करती है। यीशु ने कहा, ''और मैं, यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सबको अपने पास खींचूंगा'' (यूहन्ना 12:32)। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है, इसलिए कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिए मरा तो सब मर गए; और वह इस निमित्त सब के लिए मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिए न जीएं परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा'' (2 कुरिन्थियों 5:14, 15)।

क्रूस मसीहियों में परमेश्वर और एक दूसरे के प्रति प्रेम *भरता* है। यूहन्ना ने लिखा, ''हम इसलिए प्रेम करते हैं कि, पहले उसने हम से प्रेम किया'' (1 यूहन्ना 4:19)। मसीही लोग जब प्रतिदिन उसके लोगों के लिए उसके प्रेम का मनन करते हैं, तो वे और गहराई से उसके प्रेम की ओर खिंचे जाते हैं। यूहन्ना ने आगे कहा, ''हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिये; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए'' (1 यूहन्ना 3:16)। यीशु के जीवन की कोई भी समीक्षा उसके प्रेम की गहराई और स्थिरता की नई और भावोत्तेजक तस्वीरें बनाती है। इन चित्रों पर विचार मसीहियों को यीशु के प्रति और एक दूसरे के प्रति एकसमान प्रेम देता है: ''परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं'' (2 कुरिन्थियों 3:18)।

क्रूस मसीहियों में पाप के प्रति घृणा और नफ़रत *भरता* है। गवाह कलवरी का क्रूस और अनन्त विनाश का अगाध गड्ढा बुराई और पाप के सर्वनाश के दो शक्तिशाली हैं। जो-जो क्रूस के कारण और नरक की आवश्यकता को समझता है, वह यह बहस नहीं करता कि पाप करने में कोई भलाई है। परमेश्वर की सन्तान यह नहीं भूल सकती कि यरूशलेम के बाहर क्रूस पर परमेश्वर के पुत्र की दर्दनाक मौत के द्वारा उसको छुटकारा दिलाया गया है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर पाप का प्रायश्चित (दाम) केवल

अपने पुत्र के बलिदान से ही उपलब्ध करवा सकता था। महंगे सौदे की यह घटना हर एक समझदार व्यक्ति को पाप छोड़ने और उससे दूर रहने के लिए विवश कर देगी।

क्रूस, मसीहियों को *मजबूर* करता है कि वे मसीह के उद्देश्य के लिए अपने आप को पूरी तरह से दे दें। इससे मसीहियों को परमेश्वर की सेवा और अन्य लोगों की सहायता के लिए कारण और सामर्थ मिलती है। पौलुस ने लिखा, ''मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्ज़दार हूं'' (रोमियों 1:14)। उसने आगे कहा, ''परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं, और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैंने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी किया, तो भी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था'' (1 कुरिन्थियों 15:10)। किसी भी मसीही को मसीह का कार्य करने के लिए उससे बढ़कर प्रेरणा नहीं मिल सकती जो यह समझकर कि परमेश्वर ने क्रूस पर उसके लिए किया, उसका आभार मानता है।

मसीह की कलीसिया अपने प्रभु की आज्ञाओं का बड़ी सावधानी से पालन करती है। वह उसकी इच्छा और उसकी योजनाओं को पूरा करती है, उसके प्रेम तथा कृपा की भीतरी प्रेरणा के कारण उसकी आज्ञा में बने रहना उसे कठिन नहीं लगता। ''और परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं हैं'' (1 यूहन्ना 5:3)।

जो कुछ मसीह ने आपके लिए किया है, उसे मन में रखें, जो बलिदान उसने आपके लिए दिया है, उसे प्रतिदिन स्मरण रखें। उद्धार के लिए उसके दान के प्रति यह सावधानीपूर्वक विचार दिन-ब-दिन उसके रूप में बदलते हुए, आपको उसकी कृपा के राज्य में प्रेम की मज़दूरी के लिए खींचते जाएंगे।

सारांश

परमेश्वर की योजना से, कलीसिया और क्रूस एक दूसरे से बन्धे हुए हैं। कलीसिया क्रूस के द्वारा बनती, शुद्ध होती, और विवश होती है।

जब यीशु क्रूस पर दुख सह रहा था, आस-पास बेकाबू हुई भीड़ की ओर से ठट्ठा उड़ाने वाले प्रश्नों की बौछार में दो प्रश्न थे ''वह अपने आप को क्यों नहीं बचाता?'' और ''परमेश्वर उसे क्यों नहीं बचाता?'' (देखिए मत्ती 27:39, 43)। भीड़ को ज़रा भी अहसास नहीं था कि वे परमेश्वर के उद्देश्य की नींव पर ही प्रहार कर रहे थे। यदि

यीशु अपने आपको बचा लेता, या यदि परमेश्वर उसे क्रूस की मृत्यु से छुड़ा लेता, तो कलीसिया का जीवित रहना असम्भव हो जाता; क्योंकि कलीसिया उन लोगों से बनी है, जिनके पिछले पाप क्रूस के द्वारा क्षमा किए गये हैं और वे प्रतिदिन क्रूस के द्वारा शुद्ध किए जाते और पवित्र किए जाते हैं। और तो और, क्रूस के बिना, कलीसिया ऐसे होती जैसे उसका जीवन आंतरिक प्रेरणा रहित हो। क्योंकि क्रूस के द्वारा कलीसिया परमेश्वर की होने के लिए और परमेश्वर के ढंग से परमेश्वर का काम करने के लिए बाधित होती है।

यदि आप मसीह की कलीसिया के बाहर हैं, तो इस में प्रवेश करने की जल्दी करें, कलीसिया में प्रवेश करने से, आपको क्रूस के सभी लाभ प्राप्त होते हैं। कलीसिया उन लोगों की देह ही है जिन्हें मसीह के लहू के द्वारा छुटकारा मिला है और वे परमेश्वर की संतान के रूप में जीवत व्यतीत करते हैं।

इस संसार में हर एक व्यक्ति परमेश्वर के उदार दानों से घिरा हुआ है। वह हमें सांस लेने के लिए हवा, पीने के लिए पानी, रहने के लिए जगह, आनन्द करने के लिए पारिवारिक सम्बन्ध और अन्य असंख्य लाभ प्रदान करता है। परमेश्वर के सभी उपकारों को एक-एक करके बताना किसी के वश की बात नहीं। बिना किसी सन्देह के, उसकी कृपा की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति वह उद्धार है, जो वह हमें मसीह के द्वारा देता है। इसमें परमेश्वर को सबसे बड़ा दाम चुकाना पड़ा, और जो पापी इसे पा लेते हैं, उन्हें सब से अधिक लाभांश मिलता है।

बहुत से लोगों ने परमेश्वर के करुणामय हाथ से बहुत सी भौतिक आशिषें तो पाई हैं परन्तु उन्होंने उसके उद्धार को प्राप्त नहीं किया। क्या आप भी उनमें से हैं? मसीह में विश्वास करके (रोमियों 10:10), पाप से मन फिराकर (प्रेरितों के काम 11:18), मसीह को परमेश्वर का पुत्र अंगीकार करके (रोमियों 10:10), और मसीह में बपतिस्मा लेकर (गलतियों 3:27), आप मसीह की देह में प्रवेश कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 12:13), जो कि कृपा का स्थान है। इस प्रकार आप उसके अनन्त जीवन को पा सकते हैं। पौलुस ने कहा, ''क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?'' (रोमियों 6:3); ''हम को उस में उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों (पापों) की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत (दयालुता से दिया) से किया'' (इफिसियों 1:7, 8क)।

यीशु, अपने क्रूस के द्वारा, क्षमा और जीवन के लिए जो उसकी देह, अर्थात

कलीसिया से बनता है, आपको निमन्त्रण देता है। क्या आप उसका निमन्त्रण स्वीकार करेंगे ?

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 236 पर)

1. बाइबल की कहानी का सार क्या है ?
2. मसीहियत के पास इसके केन्द्र में क्या है जो अन्य किसी धर्म में नहीं ?
3. व्याज़्या करें कि मसीहियत कलीसिया रहित क्यों नहीं हो सकती ?
4. क्रूस कलीसिया के लिए कौन सी तीन बातें करता है ?
5. कइयों ने भौतिक आशिषों को पाकर परमेश्वर के दयालु हाथ को देखा है परन्तु उसके उद्धार के दान को प्राप्त नहीं किया। आप मसीह की देह में कैसे प्रवेश कर सकते हैं ?
6. यीशु, अपनी क्रूस के द्वारा, आपको किन दो आशिषों को पाने का निमन्त्रण देता है ?
7. यीशु की देह तब बनती है जब उसके पास आने वाले लोग क्षमा और जीवन प्राप्त कर लेते हैं। इस देह को क्या कहा जाता है ?

शब्द सहायता

कलीसिया का सिर - यीशु मसीह (इफिसियों 1:22, 23)।

मोल लिया - खरीदा। जब हम कहते हैं कि मसीहियों को ''मसीह के लहू से मोल लिया गया है,'' तो इसका अर्थ है हमारे पापों के लिए यीशु की क्रूस पर मृत्यु।

मेल - वापस लाना। टूटे हुए रिश्ते को सुधारना। परमेश्वर के साथ हमारा मेल यीशु मसीह के द्वारा होता है।

पवित्रता - परमेश्वर के विशेष उद्देश्य के लिए ''अलग होना''।

बदलना - मसीही का यीशु के स्वरूप में नया स्वभाव अपनाने के लिए बदलना। रोमियों 12:2 कहती है, ''और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये

हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।''

[1]हैनरी सी. थियसन, *लैक्चर्स इन सिस्टेमैटिक थियोलोजी* (ग्रैंड रैपिडज़, मिशि.: Wm. B. इर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1949), 313। [2]आर.ए.टोरे, *व्हट द बाइबल टीचस* ([बाइबल क्या सिखाती है] न्यूयॉर्क: ज्लेमिंग एच. रेवल कं., 1898), 144।